All India Federation of Astrologers' Societies (Regd.)

September- 2009

Jyotish Bhushan- Paper 2

Time- 3 hrs. **MM: 100**

Questions No. 1 & 2 are compulsory and attempt four from others.
प्रश्न 1 और 2 अनिवार्य है तथा अन्य में से कोई 4 प्रश्न हल करें।

Q.1. निम्नलिखित में से सही या गलत संक्षिप्त कारण सहित बतायें –

(i) सर्वार्थसिद्धि योग वार एवं तिथि के अनुसार होता है ( )

(ii) द्विपुष्कर योग एवं पंचक नक्षत्रों में शुभ कार्य वर्जित है ( )

(iii) भारत के कुछ क्षेत्रों में दस कूटों का मिलान भी किया जाता है ( )

(iv) नाड़ी दोषयुक्त कुंडली मिलान आयु एवं संतान के लिए कष्टकारी नहीं होता ( )

(v) कृष्णपक्ष में मुहूर्त के लिए ताराबल का होना आवश्यक होता है ( )

Answer Q.No. 1.

(i) सही
जैसे – रविवार – हस्त, मूल,
सोमवार – श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा आदि पड़े तो यह योग बनता है।

(ii) सही
क्योंकि द्विपुष्कर में दो आवृति एवं पंचक नक्षत्रों में उस कार्य की पांच आवृत्ति हो जाती हैं।

(iii) सही
दक्षिण भारत राज्यों, उड़ीसा, प. बंगाल में

(iv) गलत
नाड़ी से आयु एवं संतान के लिए कष्टकारी होता है इसीलिए इसे 8 गुण दिये गये हैं।

(v) सही
क्योंकि कृष्ण पक्ष में चंद्रमा की स्थिति कमजोर होती है जिस कारण मुहूर्त के लिए (भाग्य) तारा बल का होना आवश्यक है।

Q.2. सही विकल्प का चुनाव करके उत्तर संख्या उत्तर पुस्तिका में लिखें।

(a) भद्राकाल में आवश्यक होने पर भी शुभ कार्य नहीं किया जा सकता यदि –

(i) भद्रा का वास पाताल लोक में हो
(ii) भद्रा का वास स्वर्ग लोक में हो
(iii) भद्रा का वास मृत्यु लोक में हो
(iv) ऊपर्युक्त किसी में भी

(b) कुंडली मिलान के लिए अष्टकूट मिलान में निम्नतम अंक प्राप्त होने चाहिए

(i) 10 अंक
(ii) 24 अंक
(iii) 18 अंक
(iv) 36 अंक

(c) यदि सूर्य के अंश 18^0 हों और तारा डूबा हुआ हो तो निम्न अवश्य होगा–

(i) बुध के अंश 3 होंगे
(ii) चंद्र के अंश 0 होंगे
(iii) गुरु के अंश 14 होंगे
(iv) शुक्र के अंश 2 होंगे

(d) कुंडली मिलान में यदि कन्या के राशि कर्क एवं वर की राशि मिथुन हो तो ग्रह मैत्री में प्राप्त अंक होंगे –

(i) 1 अंक
(ii) 4 अंक
(iii) 5 अंक
(iv) 3 अंक

(e) यदि कन्या की कुंडली में मंगल चतुर्थ भाव में हो और वर की कुंडली में चतुर्थ भाव में शनि हो तो –

(i) वर मांगलिक होगा
(ii) कन्या मांगलिक नहीं होगी
(iii) कन्या का मांगलिक दोष परिहार हो जाएगा
(iv) कन्या का मांगलिक परिहार नहीं होगा

Answer Q.No. 2.

(a) (iii) भद्रा का वास मृत्यु लोक में

(b) (iii) 18 अंक

(c) (iii) गुरु के अंश 14 होंगे

(d) (i) 1 अंक

(e) (iii) कन्या का मांगलिक दोष परिहार हो जायेगा।

Q.3. निम्नलिखित जन्मपत्रियों का गुण मिलान कारण सहित करें और प्राप्त अंकों को बतायें।

Answer Q.No. 3.

लड़का की कुंडली

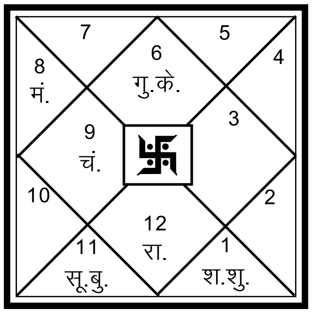

लड़का की कुंडली

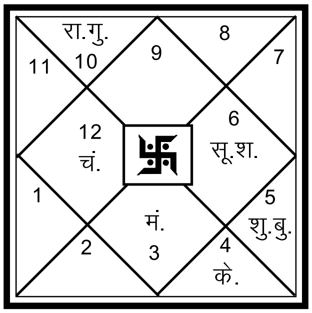

लड़का : चंद्र का अंश

8^S 00° 40' 51"
8 x 30° 40' 51"
240° 40' 51"
240 x 60' + 40' 51"
14400' + 40' 51"
144051"
19 वां नक्षत्र का पहला चरण
नक्षत्र मूल –1

लड़की : चंद्र का अंश

5^S 26° 58' 54"
5 x 30° +26° 58' 54"
150° +26° 58' 54"
176° 58' 54"
176 x60 + 58' 54"
10560'+58' 54"
नक्षत्र 14वें का पहला चरण
चित्रा –1

लड़के का नक्षत्र – मूल पहला चरण
मूल –1
(19)

लड़की का नक्षत्र – चित्रा पहला चरण
चित्रा –1
(14)

गुण नाम	क्र. संख्या	कुल	गुण/नाम	लड़की	लड़का	प्राप्त गुण
वर्ण	1	1	वर्ण	वैश्य	क्षत्रिया	1
वश्य	2	2	वश्य	मानव	मानव	2
तारा	3	3	तारा	6 क्षेम्य	5 संपत	1½
योनि	4	4	योनि	व्याघ्र	श्वान	1
ग्रह मैत्री	5	5	ग्रह मैत्री	कन्या (बुध)	धनु (बृहस्पति)	½
गण	6	6	गण	राक्षस	राक्षस	6
भकूट	7	7	भकूट	कन्या	धनु	7
नाड़ी	8	8	नाड़ी	मध्य	आद्य	8

कुल 36 गुण **कुल प्राप्त गुण 27**

1. **वर्ण** : लड़की से लड़के का वर्ण उच्च है, लड़की का वैश्य, लड़की का क्षत्रिया है अतः 1 गुण पूरा मिला।
2. **वश्य** : दोनों ही मानव–मानव वश्य के अतः पूरे 2 गुण मिले।
3. **तारा** : क्योंकि लड़की की तारा शुभ एवं लड़की की तारा अशुभ है अतः 1½ गुण मिले।
4. **योनि** : क्योंकि व्याघ्र लड़की की एवं श्वान (कुत्ता) लड़के जो कि आपस में बनती नहीं है अतः मात्र एक ही गुण मिलेगा।
5. **ग्रह मैत्री** : क्योंकि ग्रह मैत्री चक्र में बुध एवं गुरु एक दूसरे के शत्रु हैं अतः मात्र ½ गुण मिलेगा।
6. **गण** : दोनों का समान गण राक्षस है अतः पूरे 6 गुण मिलेंगे।
7. **भकूट** : भकूट तालिका में कन्या से धनु राशि को देखने पर पूरे 7 गुण मिलते हैं बुध गुरु से शत्रुवत व्यवहार नहीं रखता।
8. **नाड़ी** : क्योंकि दोनों की अलग–अलग नाड़ी है अतः पूरे 8 गुण मिलते हैं।

Q.4. मांगलीक दोष का निर्माण कैसे होता है ? मांगलिक परिहार का विस्तृत जानकारी दें।

Answer Q.No. 4.

मांगलिक दोष

जिस जातक के जन्मकुंडली में प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश भाव (1, 4, 7, 8, 12) में मंगल ग्रह उपस्थित होता है, उसे मंगल दोष युक्त या मांगलिक कहा जाता है। ऐसे जातकों के मंगल प्रभाव होने के कारण विवाह देरी से होते हैं।

मांगलिक व्यक्ति का विवाह मांगलिक व्यक्ति से ही करने पर वैवाहिक जीवन सुखी माना जाता है। अन्यथा गैर मांगलिक व्यक्ति के लिए कष्टकारी होता है। मंगल दोष चार प्रकार से देखा जाता है। लग्न और चंद्रमा को मांगलिक के लिए विशेष तौर पर आधार माना जाता है। यदि व्यकित् लग्न और चंद्र से मांगलिक नहीं है तो मांगलिक नहीं माना जाएगा। यदि इन दोनों में से किसी से भी मांगलिक होगी तब हम अन्य आधारों से भी विचार करेंगे। यदि कोई व्यक्ति लग्न, चंद्र, सूर्य और शुक्र इन चारों से मांगलिक होगा तो उसे सबसे प्रबल मांगलिक माना जाता है और अष्टम भाव का मांगलिक सबसे अधिक प्रबल माना जाता है। जबकि 12वें भाव का मांगलिक सबसे कम प्रभावी माना जाता है। कुछ लोग दूसरे घर में मंगल होने से भी मांगलिक मानते हैं। उसका कारण है कि सप्तम भाव जातक के स्त्री का माना जाता है और दूसरे घर सप्तम से अष्टम होता है जो कि आयु भाव माना जाता है।

मांगलिक होने से जातक में क्रोध की भावना अधिक होती है तथा विवाह में देरी होने की भी संभावना होती है। मांगलिक दोष मंगल के कारण बनता है और मंगल नैसर्गिक रूप से पापी ग्रह है। अतः मंगल जिस भाव में होगा उस भाव के फलों का नाश करेगा। अष्टम भाव का मंगल जातक की आयु पक्ष को कमजोर करेगा। जबकि सप्तम का मंगल वैवाहिक जीवन में मतभेद पैदा करता है। प्रथम भाव में मंगल जातक में क्रोध को बढ़ाता है। चतुर्थ भाव में मंगल जातक के सुखों का नाश करता है एवं द्वादश भाव में मंगल खुद कमजोर हो जाता है।

मांगलिक परिहार :

1. जातक के केंद्र भाव में यदि चंद्रमा मंगल की युति हो तो भी मांगलिक दोष समाप्त हो जाता है।
2. यदि जातक को तृतीय, षष्ठ, अष्टम व एकादश भाव में किसी नीच या पापग्रह स्थित हो तो
3. यदि मंगल लग्न स्थान, चतुर्थ स्थान, सप्तम स्थान, अष्टम स्थान एवं द्वादश स्थान में मंगल नीच का, उच्च का, स्वराशि का हो तो मंगल दोष परिहार हो जाता है।
4. जिन स्थानों (उपर्युक्त स्थानों) में कन्या (लड़की) में कन्या का मंगल हो एवं उसी स्थान में लड़के के अन्य पापी ग्रह जैसे शनि, राहु अथवा केतु हो तो दोष परिहार हो जाता है।
5. यदि कन्या के जन्मकुंडली में मंगल दोष हो एवं वर के चंद्र कुंडली से मांगलिक हो तो दोष परिहार हो जाता है।
6. यदि वर की कुंडली में 1, 4, 7, 8, 12वें स्थान में कोई भी पापग्रह शनि, राहु, केतु हों एवं लड़की के भी उन्हीं स्थानों में प्रबल पापग्रह हो तो मंगल दोष परिहार हो जाता है।
7. यदि मांगलिक शुभ बृहस्पति की दृष्टि हो तो मंगल दोष परिहार हो जाता है।
8. यदि शुभ ग्रह गुरु, शुक्र, चंद्र, बुध स्व राशि, उच्च राशि, आदि हो तो दोष परिहार हो जाता है।
9. यदि लग्नेश लगनाधिपति बलशाली होकर केंद्र/त्रिकोण भाव में स्थित हो तो दोष परिहार हो जाता है।
10. यदि उपर्युक्त भावों में स्थित मंगल पर परम शुभ ग्रहों की शुभकारक दृष्टि हो तो दोष परिहार हो जाता है।

उपसंहार : अपरिहार्य कारणों से यदि मंगल दोषों का पूर्णतः परिहार न हो रहा हो तो निम्नांकित उपाय किये जाने चाहिए।

1. कुंभ विवाह/ घर विवाह
2. विष्णु प्रतिमा विवाह
3. मंगल दोष निवारणार्थ महाकाल शिव का पूजन

Q.5. किसी मुहूर्त के लिए सामान्य लग्न शुद्धि एवं दिन शुद्धि का विस्तृत विवरण दें।

Answer Q.No. 5.

सामान्य लग्न शुद्धि

शास्त्रों में उल्लिखित है कि चंद्र बल की अपेक्षा लग्न बल प्रधान है। सामान्य लग्न शुद्धि शास्त्रानुसार निम्न प्रकार बताई गई है।

लग्न बल

1. जन्म राशि से लग्न राशि 8/12 का परित्याग करे।
2. लग्न से चंद्रमा 3, 6, 10, 11 वां शुभ है।
3. जन्म राशि से लग्न राशि यदि 3, 6, 10, 11 वां शुभ है।
4. लग्न में केंद्र तथा शुभ ग्रह हो तो लग्न को बल मिलता है तथा त्रिषडाय (3, 6, 11) में पापग्रह हो तो सर्वमान्य है।
5. **चंद्र बल** : जन्म राशि का चंद्रमा यदि 1, 3, 6, 7, 10, 11 में हो तो अच्छा फल /शुक्ल पक्ष का 2, 5, 9 भी शुभ होता है।
6. तारा बल : जन्मकालीन नक्षत्र से इष्टकालीन नक्षत्र तक गिनती कर 9 का भाग देने पर यदि, 3, 5, 7 अंक आये तो शुभ। अन्यथा अशुभ तारा होता है।

लग्न दिन शुद्धि

तिथि : 2, 3, 5, 7, 10, 11, 12 शुभ तिथियां हैं तथा कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तथा शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी शुभ तिथि मान्य है।

वार : सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार।

नक्षत्र : रोहिणी, हस्त, श्रवण, धनिष्ठा, चित्रा, रेवती, अश्विनी, पुष्य, अनुराधा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, मृगशिरा, स्वाति, शतभिषा।

करण : बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज शुभ। चतुष्पद शकुनि, नाग, किस्तुघ्न सामान्य सामान्य। विष्टिकरण का सदैव त्याग करना चाहिए।

लग्न शुद्धि

लग्न से 8/12 स्थान रिक्त हो, 3/8 पर सूर्य, शनि हो। 2/3 में चंद्र 2, 3, 4, 5, 6, 7, 9, 10, 11वें भाव में बुध एवं गुरु 2, 3, 4, 5, 9, 10, 11वें भाव में शुक्र तथा 3, 5, 6, 8, 9, 11, 12 भाव में राहु हो।

उपसंहार

चर लग्न, चर नवांश तथा राशि स्थित चंद्रमा ये तीनों चर शुभ कार्यों में वर्जित हैं। अतः गुण व दोष इन दोनों के तारतम्य से मुहूर्त शुद्धि एवं दिन शुद्धि की जानी चाहिए।

Q.7. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखें।

(a) त्रिपुष्कर योग (b) होरा

(c) अमृत सिद्धि योग (d) दिशा शूल विचार

Answer Q.No. 7. (a) **त्रिपुष्कर योग**

जिन नक्षत्रों के तीन चरण एक राशि में हों वे त्रिपुष्कर नक्षत्र हैं। कृत्तिका, पुनर्वसु, उत्तरफाल्गुनी, विशाखा, उत्तराषाढ़ एवं पूर्वभाद्र त्रिपुष्कर नक्षत्र हैं।

नियम– द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी तिथियों शनिवार, मंगलवार, रविवार तथा कृत्तिका, पुनर्वसु, उत्तरफाल्गुनी, विशाखा, उत्तराषाढ़, पूर्वभाद्र की स्थिति आती है, तो त्रिपुष्कर योग बनता है।

त्रिपुष्कर योग मृत्यु, विनाश और वृद्धि में त्रिगुणित फल देता है।

उदाहरण– मंगलवार के दिन द्वितीया तिथि और उत्तरफाल्गुनी नक्षत्र हो, तो त्रिपुष्कर योग बन जाता है। इस योग में किसी की मृत्यु होती है, तो उसके सहित तीन व्यक्तियों की मृत्यु, यदि इस योग में किसी वस्तु की क्षति हो जाय, तो तीन वस्तुओं का विनाश और किसी का जन्म या किसी पदार्थ की प्राप्ति हो तो त्रिगुणित जन्म या पदार्थों का लाभ होता है।

त्रिपुष्कर योग चक्र

वार	तिथि	नक्षत्र
रविवार	द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी	कृत्तिका, पुनर्वसु, उ.फा., विशाखा, उ.षा., पू.भा.
मंगलवार	द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी	कृत्तिका, पुनर्वसु, उ.फा., विशाखा, उ.षा., पू.भा.
शनिवार	द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी	कृत्तिका, पुनर्वसु, उ.फा., विशाखा, उ.षा., पू.भा.

(b) **होरा**

कार्य–सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त पूर्ण फलदायक और अचूक माने गए हैं। सात ग्रहों के सात होरा हैं, जो दिन–रात के 24 घण्टों में घूमकर मनुष्य को कार्य–सिद्धि के लिए अशुभ समय में भी सुसमय सुअवसर प्रदान करते हैं। सूर्य की होरा राज–सेवा के लिए उत्तम है, प्रवास के लिए शुक्र की होरा, ज्ञानार्जन के लिए बुध की होरा, सभी प्रकार की कार्य सिद्धि के लिए चन्द्रमा की होरा, द्रव्य–संग्रह के लिए शनि की होरा, विवाह के लिए गुरु की होरा तथा युद्ध, कलह और विवाद के लिए मंगल की होरा उत्तम होती है। प्रत्येक होरा 1 घण्टे की होती है। जिस दिन जो वार होता है, उस वार के (सूर्योदय के समय) 1 घण्टा तक उसी वार की होरा रहती है। उसके बाद 1 घण्टे की दूसरी होरा उस वार के छठे वार की होरा होती है। इसी प्रकार दूसरी होरा के वार से छठे वार की होरा तीसरे घण्टे तक रहती है। इस क्रम से 24घण्टे में 24 होरा बीतने पर अगले वार के सूर्योदय–समय उसी (अगले) वार की होरा आ जाती है।

रवि की होरा : राज्याभिषेक, प्रशासनिक कार्य, नवीन पद ग्रहण, राज–दर्शन, राज्यसेवा, औषधि का निर्माण, स्वर्ण–ताम्रादि कार्य, यज्ञ, मन्त्रोपदेश, गाय–बैल एवं वाहन का क्रय आदि कार्य करें।

सोम की होरा : कृषि सम्बन्धी कार्य, नवीन वस्त्र अथवा मोती रत्न, आभूषण धारण, नवीन योजना, परिकल्पना, कला सीखना, बाग–बगीचा लगाना, वृक्षारोपण एवं चांदी की वस्तुओं का निर्माण कार्य करें।

मंगल की होरा : वाद–विवाद, मुकद्दमा, जासूसी कार्य, छल करना, असद् कार्य, ऋण देना, युद्ध–नीति, साहस कृत्य, खनन कार्य, स्वर्ण–ताम्रादि कार्य, शल्य–क्रिया (आपरेशन) एवं व्यायाम कार्य करें।

बुध की होरा : साहित्यारम्भ, पठन–पाठन, शिक्षा–दीक्षा, लेखन, प्रकाशन, अध्ययन, शिल्पकला, मैत्री, क्रीड़ा, धान्य–संग्रह, चातुर्य, बही–खाता, हिसाब–किताब, लोक–सम्पर्क एवं पत्र व्यवहार कार्य करें।

Continue.......

गुरु की होरा : धार्मिक कार्य, विवाह, ग्रह–शान्ति, यज्ञ–हवन, दान–पुण्य, मांगलिक कार्य, देवार्चन, देव–प्रतिष्ठा, न्यायिक कार्य, नवीन वस्त्राभूषण धारण, विद्याभ्यास, वाहन क्रय–विक्रय एवं तीर्थाटन कार्य करें।

शुक्र की होरा : नृत्य–संगीत, स्त्री–प्रसंग, प्रेम–व्यवहार, प्रियजन–समागम, उत्सव, वस्त्र अलंकार धारण, लक्ष्मी–पूजन, व्यापारिक कार्य, कृषि–कार्य, ऐश्वर्यवर्द्धक कार्य एवं फिल्म–निर्माण कार्य करें।

शनि की होरा : गृह–प्रवेश, नौकर–चाकर रखना, सेवा विषयक कार्य, मशीनरी कल–पुर्जों के कार्य, असत्य भाषण, छल कपट, अर्क–निष्कासन, विसर्जन, धन–संग्रह एवं पद–ग्रहण कार्य करें।

(c) अमृत सिद्धि योग

अधोलिखित वार एवं नक्षत्र के मिलन से अमृत योग बनता है।

- रविवार को हस्त नक्षत्र हो, तो अमृत सिद्धियोग बनता है।
- सोमवार को मृगशिरा नक्षत्र हो, तो अमृत सिद्धियोग बनता है।
- मंगलवार को अश्विनी नक्षत्र हो, तो अमृत सिद्धियोग बनता है।
- बुधवार को अनुराधा नक्षत्र हो, तो अमृत सिद्धियोग बनता है।
- गुरुवार को पुष्य नक्षत्र हो, तो अमृत सिद्धियोग बनता है।
- शुक्रवार को रेवती नक्षत्र हो, तो अमृत सिद्धियोग बनता है।
- शनिवार को रोहिणी नक्षत्र हो, तो अमृत सिद्धियोग बनता है।

यह योग अपने नाम को चरितार्थ करते हुए सर्वांगीण सिद्धि कारक होता है।

तिथि वार जनित अमृत योग

निम्नलिखित वार एवं तिथि के मिलन से अमृत सिद्धि योग बनता है।

वार	तिथि
रविवार	5, 10, 15
सोमवार	5, 10, 15
मंगलवार	2, 7, 12
बुधवार	1, 6, 11
गुरुवार	3, 8, 13
शुक्रवार	4, 9, 14
शनिवार	1, 6 ,11

(d) दिशा शूल विचार

- सोमवार एवं शनिवार को पूर्वदिशा में दिक्शूल होता है।
- सोमवार एवं गुरुवार को अग्निकोण में दिक्शूल होता है।
- गुरुवार को दक्षिण दिशा में दिक्शूल होता है।
- रविवार एवं शुक्रवार को नैर्ऋत्य एवं पश्चिम दिशा में दिक्शूल होता है।
- मंगलवार को वायव्य एवं उत्तर दिशा में दिक्शूल होता है।
- बुधवार एवं शुक्रवार को ईशान कोण में दिक्शूल होता है।

अतः जिस वार को यात्रा की दिशा में दिक्शूल हो उसे त्याग दें।